गुरुवाणी

ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे सहयोगियों को इतनी सद्बुद्धि दें, प्रेरणा दें कि राष्ट्र ऋण को पूरा कर सके।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-04/2016-18

वर्ष-१६, अंक ३, वाराणसी। सोमवार १५ फरवरी २०१६ ई० सहयोग राशि ४.२५

निर्बाध गति से बहती रही स्थल में निर्वाण, अभिषेक एवं स्थापना दिवस की त्रिवेणी

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक १० फरवरी २०१६ दिन बुधवार को बाबा कीनाराम स्थल, क्रींकुण्ड, वाराणसी में बड़े ही हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ विपुल श्रद्धालु भक्तों के मध्य ब्रह्मलीन बुढ़ऊ बाबा (राजेश्वर रामजी) का निर्वाण दिवस, वर्तमान पूज्यपाद पीठाधीश्वर जी का अभिषेक दिवस एवं ''अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान'' का स्थापना दिवस मनाया गया। ध्यातव्य है कि वर्ष १९७८ में अघोर गुरुपीठ के पीठाधीश्वर एवं परमपूज्य बड़े सरकार (भगवान अवधूत राम जी) के गुरु अघोराचार्य बाबा राजेश्वर राम जी के अनहद पर्दा कर लेने के उपरान्त मात्र ९ वर्ष की आयु के विलक्षण लक्षणों से युक्त बालक को गोद में लेकर परमपूज्य ने क्रीं कुण्ड स्थल का विधिवत पीठाधीश्वर घोषित किया था एवं अधिकारिक रूप से परम पूज्य बालक सिद्धार्थ गौतम राम जी अनायास ही अघोराचार्य बाबा कीनाराम की आदि गद्दी पर जा बैठे थे, जिसे देखकर उक्त अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह के द्वारा हर हर महादेव की स्वर लहरी के मध्य एवं अघोराचार्य बाबा कीनाराम की सफल भविष्यवाणी (ग्यारहवें पीठाधीश्वर के रूप में पुर्न आगमन) चरितार्थ हुई तब से लेकर निरन्तर प्रतिवर्ष उक्त समारोह भक्तों एवं श्रद्धालुओं द्वारा बड़े ही जोश-खरोश एवं भक्तिभाव के साथ मनाया जाता है। जनमानस के कल्याण के प्रबल लक्ष्य के साथ परमपूज्य वर्तमान पीठाधीश्वर जी द्वारा बड़े सरकार के पर्दा (वर्ष १९९२) के पश्चात् नियमित रूप से क्रींकुण्ड स्थल के जीर्णोद्धार का भी बीड़ा उठाया गया जो आज तक निरन्तर अबाध गति से जारी है। इसी कड़ी में भारतवर्ष एवं विदेशों में भी फैले भक्तों के साथ ही सर्वकल्याण हेतु स्थल के वर्तमान पीठाधीश्वर जी द्वारा ''अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान'' नामक ट्रस्ट की भी स्थापना दिनांक १० फरवरी १९९९ को की गई तब से श्रीचरण को ही उक्त ट्रस्ट के अध्यक्ष पद के गुरुतर दायित्व का भी निर्वहन करना पड़ रहा है। उपरोक्त ट्रस्ट के बैनर तले परम पूज्य के निर्देशन में न केवल समाज की रुढ़िवादी कुरीतियों का खात्मा हो रहा है बल्कि नवयुवकों/युवतियों में उनके कर्त्तव्यबोध को भी जाग्रत कर उन्हें सफल राष्ट्र के नागरिक बनाने का कार्य निरन्तरता से आगे बढ़ता जा रहा है जिससे माँ सर्वेश्वरी की कृपा पात्रों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णित तीनों ही महत्वपूर्ण आध्यात्मिक दृष्टान्तों के उपलक्ष्य में हर वर्ष १० फरवरी को अघोर त्रिवेणी प्रवाहित होती है, जहाँ दूर-दराज देहातों, शहरों के अलावा अन्य प्रदेशों से भी अघोर भक्तों का स्थल पर एकत्रित होकर सपरिवार कृतार्थ होने की परम्परा का पालन किया जाता है। इसी कड़ी में इस वर्ष भी समारोह की पूर्व संध्या से ही अघोर भक्तों का जन सैलाब स्थल पर एकत्रित हुआ, जहाँ चारों ओर साफ-सफाई, प्रसाद ग्रहण एवं पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था स्वयं सेवकों द्वारा की गयी थी। इस वर्ष भी बाबा कीनाराम जी समाधि पर अवस्थित शिवलिंग को माला-फूल से शृंगारित किये जाने के पश्चात् विद्युत के आकर्षक झालरों से सजाया गया था, जिससे समाधि की रात्रिकालीन छँटा देखते ही बनती थी। स्थल परिसर में अवस्थित समस्त औघड़ समाधियों के अलावा कालू टीला के पास अवस्थित अघोर-गणेश, कूटदंत विनायक, बड़े सरकार की निर्माणाधीन

शेष पृष्ठ दो पर

श्रीचरण आशीर्वचन

''परमपूज्य माँ गुरु और इस पीठ पर अन्दर जितने भी समाधियाँ हैं, सर्वप्रथम मैं शीश नवाता हूँ। उसके बाद हमारे सामने बैठे दाहिने तरफ मातायें, बहनें, बाएं तरफ बैठे हुये हमारे धर्मबंधुओं जैसा कि हर वर्ष की भांति इस १० फरवरी के बुढऊ बाबा के निर्वाण दिवस पर आप सभी एकत्रित हुए हैं और सुबेरे से दर्शन पूजन करके कुण्ड में स्नान करके अपनी जो बाधायें थी जो कष्ट थे उसको आपने दूर किया और साध्यंकालीन गोष्ठी में आप उपस्थित हैं जैसा कि हर वर्ष की भांति सभी विद्वानजनों ने अच्छी अच्छी बातें बतायी आपको। बंधुओं! आज हमारे समाज में जैसा कि मानवीय मूल्यों में गिरावट आ रही है जैसा कि सब लोग बोल रहे हैं तो ऐसा देखने में प्रतीत आ रहा है तो बंधुओं ये सब दूर करने के लिये हमको आपको संकल्पित तो होना ही पड़ेगा। बिना संकल्पित हुये हम ये सोचे कि कोई बदल देगा कोई भगवान आयेंगे कोई नेता आयेगा हमारे उस गिरावट को हमारे उस कृत्य को बदल देगा ये संभव नहीं है। बंधुओं! जो आज समाज में बहुत सी विषमतायें फैली हुई है उनको दूर करना ये हमारा आपका प्रथम कर्त्तव्य हैं। तभी आप मनुष्यत्व को प्राप्त कर सकते हैं। जैसा कि डॉक्टर साहब ने बताया मनुष्यत्व को प्राप्त आप अभी नहीं कर सकते हैं। एक समय आयेगा जब आप उस पे उसको निर्वाह करेंगे और उसका सृजन करेंगे तभी आप उस पर जाकर अपने एक अवस्था में मनुष्यत्व को प्राप्त करेंगे। तो बंधुओं हर बार की तरह इस बार भी आपसे मेरी यही विनती है कि आप संकल्पित होयें ऐसा नहीं है कि कुछ बहुत बड़ा चीज कोई चीज लें एक छोटी चीज को लेकर अगर आप संकल्पित होते हैं तो धीरे-धीरे करके घड़ा भरेगा, घड़ा भरेगा तो समाज भरेगा और समाज भरेगा तो राष्ट्र भरेगा क्योंकि हमारे आपके ऊपर राष्ट्रीय ऋण, सामाजिक ऋण बहुत सारे हमारे ऊपर हैं। जिनको हमको आपको मिलकर दूर करना होगा इन्हीं चन्द शब्दों के साथ मैं आपमें बैठी माँ भगवती को प्रणाम करता हूँ। जय- माँ गुरु जय माँ सर्वेश्वरी।।''

प्रादुर्भाव

पिण्ड पंचमहाभूतों का होता है। पंच महाभूतों का प्रादुर्भाव प्रकृति से होता है, प्रकृति की एक 'सत्ता' होती है। इसी सत्ता को परा-अपरा शक्ति, भगवान खुदा अल्लाह, गॉड इत्यादि नामों की संज्ञा से अविभूषित किया जाता है। सत्ता से प्रकृति, प्रकृति से अण्डज, पिण्डज, स्वेतज, जड़, जंगम या स्थावर होते हैं सबकी आधार भूतशिला सत्ता ही है।

हमें देखने, सुनने, कहने, लिखने में जो आता है, यहाँ तक प्रकृति है। प्रकृति जहाँ पर समाहित होती है, वह 'सत्त' है। वह सत्त भी प्रकृति में समाहित होती है। 'सत्ता' का शक्ति रूप अंश प्रकृति में परिलक्षित है। हमें 'सत्ता' के पूर्व रूप का अध्ययन और साकार रूप पिण्डज में या अण्डज में या स्थावर में अनुभव या परिलक्षित हो या उसके सभी गुण देखने में अपने को अपने में भाषित हो, तो समझना चाहिये कि 'सत्ता' का प्रादुर्भाव होता है।

'सत्ता' का प्रादुर्भाव या अवतरण अण्डज या स्थावर के रूप में बहुत कम हुआ है। हुआ भी हो तो यहाँ पर अध्ययन करना बहुत आवश्यक नहीं है। पिण्ड के रूप में मनुष्य के साकार रूप में सत्ता का अवतरण हुआ है। इसका उदाहरण हमारे शास्त्रों में जैसे वेद, पुराण, कुरान, बाइबिल, रामायण, गीता में है।

जब कभी, मानव दानव का रूप धारण कर लेता है, मानव जीवन अस्त, व्यस्त विकलांग हो जाता है। मानव मस्तिष्क आसुरी प्रवृत्ति को धारण कर लेता है। तो 'सत्ता' इस धरणी धाम पर मानव के रूप में मानवीय स्तर को दिव्य बनाने 'सत्ता' की संज्ञा को बतलाने आती है। उसे कहना ही नहीं होता कि मैं, ईश्वर, भगवान, ब्रह्म या शक्ति हूँ। वह आने के बाद अपने गुणों का प्रदर्शन करती है। या खुद ही प्रकाश जब अन्धकार को चीरता दिखाई देता है तो सबको मानना पड़ता है कि सूर्य उदयांचल से निकल पड़ा है। प्रभात आ गया। उसके हर एक गुण जो प्रकृति के पार मानवीय स्तर से ऊपर दैवीय स्तर के होते हैं, देखकर अनुभव होने लगता है।

राम ने अपने को कहा था? कृष्ण ने अपने को कहा था! 'मैं सत्ता हूँ, नहीं! कभी नहीं!! पूरे विश्व को मानना पड़ा। और सभी जाने की 'सत्ता' का प्रादुर्भाव हुआ है।

अत: आप याद रक्खें कि मानव अपनी मानवता को भूल गया। मानव-दानव हो गया है। चोरी, हत्या और पाप की चरम सीमा आ गई है। मातायें, मातायें नहीं रह गई है मानव संस्कृति का पतन हो गया है। तुलसी ने जो घोर कलयुग की समीक्षा उत्तरकाण्ड में किया है। प्रत्यक्ष आपके सामने आ गया है। पूछना नहीं है सुनना नहीं। सबको दिखलाई पड़ रहा है।

याद रक्खें कि ऐसी परिस्थिति में 'सत्ता' को पिण्ड रूप धारण कर इस धरणि-धाम पर आना पड़ा है। आपको सोचने, समझने, अनुभव करने का मौका नहीं है। वह प्रत्यक्ष आपके सामने है। जो प्रतिक्षण मानव कल्याण के लिये देश देशान्तर में घूम घूमकर अघोर अलख जगा रहे हैं। आप सचेत हो जाय कि 'सत्ता' का प्रादुर्भाव हो गया है। जो होना चाहिये वही होगा।

विश्व का वायुमण्डल बदल रहा है। प्रकृति प्रसन्न हो रही है। धरती अपनी आशा के दीप जला बैठी है। समय की घड़ी बीतते देर नहीं लगती। मानव अपने भाग्य की बधाई देवें और उस 'सत्ता' को पहचानने की कोशिश मानव मस्तिष्क के परे है जिसे आत्मानुभव के द्वारा परखा जा सकता है।

अत: हम मानवों को अपने को समर्पित कर सद्बुद्धि की याचना करना ही श्रेयस्कर है कि हे जगत् जननी, जगदम्बिका हम आपके शरण में है। मानव का उद्धार हो, मानव का उद्धार हो।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**

e-mail–kinaram@rediffmail.com

www.aghorpeeth.org

निर्बाध गति से बहती रही स्थल में निर्वाण, अभिषेक एवं स्थापना दिवस की त्रिवेणी

प्रथम पृष्ठ का शेष

समाधि के चहुँओर दर्शन की व्यापक व्यवस्था थी। नर-नारी-बालक-बालिकाओं, वृद्धों के दर्शन-पूजन सुविधा को ध्यान में रखते हुए, अवांछनीय तत्त्वों की निगरानी हेतु भी समारोह की पूर्व संध्या पर ही बैठक कर स्थिति चाक-चौबंद कर ली गई थी। बरगद वृक्ष के नीचे विविध स्टालों एवं स्थायी निर्मित भव्य पण्डाल में ध्वनि विस्तारक यंत्र स्थापित कर व्यवस्था को संचालित किया जाता रहा।

समारोह के शुभ दिनांक को प्रात: साढ़े पाँच की पारम्परिक अघोर-आरती के पूर्व से ही रात्रि में स्थल में विराजमान भक्तों द्वारा क्रींकुण्ड के पवित्र जल में डुबकी लगाकर पूजा-पाठ का क्रम आरम्भ हो चुका था। अपने इष्टदेव प्रात: स्मरणीय पूज्यपाद बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी के दर्शन की भी अभिलाषा भक्तों के मध्य बढ़ती जा रही थी। ससमय पूर्वान्ह जब श्रीचरण स्वयं सेवकों के साथ स्थल पर अवस्थित अघोराचार्य निवास कक्ष से विधिवत दर्शन-पूजन आरती हेतु नीचे उतरे तो समस्त उपस्थित भक्तों/श्रद्धालुओं के जनसैलाब ने समवेत स्वर में बारम्बार "हर हर महादेव" के स्वर लहरी से पूज्य पीठाधीश्वर जी का स्वागत एवं वाणी प्रणाम किया गया। पूज्य बाबा द्वारा सर्वप्रथम बजते घड़ी-घंटों, नगाड़ों के मध्य बाबा कीनाराम जी समाधि पर पूजा-अर्चना सम्पन्न कर आरती की गई एवं परिक्रमा के पश्चात् माँ हिंगलाज यंत्र, बटुक भैरव के साथ समस्त समाधियों पर पूजा-पुष्प चढ़ाकर आरती की गई। इस नयनाभिराम दर्शन से पुलकित भक्तों की भीड़ प्रांगण सहित समस्त स्थल परिसर में फैली हुई थी एवं समस्त जन उत्साह एवं कांति से लबरेज होकर भक्तिमय वातावरण के एक-एक पल का आनन्द लेते हुए भाव-विभोर हो रहे थे। इस अवसर पर दूर-देहात से पधारे श्रद्धालु महिलाओं की श्रद्धा भक्ति एवं अविचल टकटकी देखते ही बनती थी। परम पूज्य के द्वारा बाबा कीनाराम स्थल प्रांगण में अवस्थित मूर्ति, क्रींकुण्ड सरोवर के मध्य बाबा कीनाराम की अवस्थित मूर्ति के साथ सूर्य-यंत्र की भी पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। अन्त में जब परम पूज्य के द्वारा आरती के मध्य बाबा कीनाराम की आदि गद्दी पर स्थल ग्रहण किया गया तो गगनभेदी "हर हर महादेव" के स्वर लहरियों की बारम्बारता त्वरित होती गई। अन्त में श्रीचरण द्वारा अखण्ड धूनी पर जाकर हवन की क्रिया सम्पन्न कर आरती को विराम दिया गया।

तत्पश्चात् घंटों से पूर्व कतारबद्ध अनुशासित नर-नारी श्रद्धालुओं की बारी साक्षात् सशरीर बाबा कीनाराम के रूप में वर्तमान पीठाधीश्वर जी के दर्शन की थी। इस हेतु निर्धारित भव्य स्थान, अखण्ड धूनी के ठीक उत्तर संगमरमरी दर्शन कक्ष में श्रीचरण द्वारा आसन ग्रहण किया गया। "हर हर महादेव" के स्वर को बुलंद करते एवं औघड़, अघोरेश्वरों की जयकारा लगाते हुए लगभग पूर्वान्ह साढ़े ग्यारह बजे तक कतारबद्ध ढंग से महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। समस्त दर्शनार्थियों को मुख्य अखण्ड ज्योति भवन के पीछे से निकास कराकर वहीं पर दोनों में श्रद्धालुओं द्वारा हलवा एवं चूड़ा मटर प्रसाद की भरपूर मात्रा वितरित की जा रही थी, जिसका रसास्वादन कर समस्त भक्तों ने अपने को धन्य माना। सूचना प्रसारण केन्द्र से लगातार व्यवस्था संभाली जा रही थी। दोपहर बाद अन्नपूर्णा नगर में समस्त आगन्तुकों/दर्शनार्थियों के भोजन प्रसाद ग्रहण करने हेतु प्रसारण किया गया एवं स्वयं सेवकों द्वारा कई-कई चक्रों में लगातार प्रसाद ग्रहण कराया गया। साथ ही साथ अपरान्ह चार बजे से बारादरी में अघोर गोष्ठी आयोजन की सूचना भी दी जा रही थी।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गोष्ठी में भाग लेने हेतु कतारबद्ध ढंग से महिला एवं पुरुषों द्वारा अपना-अपना स्थान ग्रहण किया गया एवं "अघोरान्ना परो मंत्रो नास्ति तत्वं गुरो परम्" के समवेत भजन का लाभ उठाया जाता रहा। गोष्ठी की अध्यक्षता हेतु श्रीचरण द्वारा जैसे बारादरी में प्रवेश किया गया। समस्त श्रद्धालुओं ने पुन: "हर हर महादेव" के स्वरों में अपने औघड़दानी बाबा को नमन किया गया तथा आसन पर बाबा को विराजमान होते ही धरौली आश्रम के वरिष्ठ अघोरनिष्ठ भक्त प्रवर श्री सूर्यनाथ सिंह के द्वारा संचालक की भूमिका का दायित्व ग्रहण कर माइक संभाला गया एवं श्रीचरण पीठाधीश्वर जी से बाबा कीनाराम (महाराजश्री) को माल्यार्पण एवं द्वीप प्रज्ज्वलन हेतु सादर अनुरोध किया गया। उक्त कार्यक्रम के पश्चात् बैठे भक्तों द्वारा पुन: जय जयकार एवं करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। अपने आसन पर श्रीचरण के स्थान ग्रहण करने के बाद बालक अघोर भक्त आदर्श अतुल के द्वारा प्रथम माल्यार्पण, तत्पश्चात् बी०एच०यू० साइंस फैकेल्टी के प्रवक्ता डॉ० नन्दलाल सिंह ने माल्यार्पण कर अपने को कृतार्थ किया।

तत्पश्चात् स्थानीय मुहल्ला-खोजवाँ

शेष पृष्ठ तीन पर

निर्बाध गति से बहती रही स्थल में निर्वाण, अभिषेक एवं स्थापना दिवस की त्रिवेणी

द्वितीय पृष्ठ का शेष

निवासी युवा औघड़ भक्त श्री जितेन्द्र गुप्ता द्वारा निर्देशित सी०डी० "औघड़ तेरे द्वार" का शुभ लोकार्पण किया गया, साथ ही संस्था "अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान" द्वारा प्रकाशित अघोर कैलेण्डर वर्ष २०१६ का भी लोकार्पण किया गया जिसका समवेत करतल ध्वनि एवं "हर हर महादेव" के स्वर से भक्तों द्वारा स्वागत किया गया।

अघोर गोष्ठी का शुभारम्भ श्रीचन्द्र नाथ ओझा, सम्पादक अघोरेश्वर निनाद के मंगलाचरण गीत "देते देते भी अघाते नहीं, ऐसे औघड़ दानी हैं" से किया गया। तत्पश्चात् दूसरे वक्ता के रूप में मंच पर जनपद हरदोई सदर के तहसीलदार पद पर कार्यरत अघोर भक्त श्री प्रभाकर त्रिपाठी जी को उद्बोधन हेतु संचालक महोदय द्वारा अनुरोध किया गया। वक्ता के द्वारा श्रीचरण एवं स्थल की समस्त विभूतियों एवं समस्त उपस्थित गुरु भाईयों, बच्चों, माताओं, बहनों का अभिनन्दन करते हुए "नये अघोर आश्रम" कमरौली, हरदोई की भौगोलिक एवं पौराणिक स्थिति की समीक्षा कर अवगत कराया गया। श्रीचरण द्वारा विगत वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर छोटे-छोटे संकल्प को लेकर पूरा करने एवं वाणियों को आचरण में चरितार्थ किये जाने को ही वास्तविक दर्शन-पूजन कहा गया तथा बाबा की वाणियों का प्रचार-प्रसार आस-पास, अड़ोस-पड़ोस में भी करते रहने की महत्ता को बताया गया, अगले वक्ता के रूप में दिलदारनगर इण्टर कालेज के प्राचार्य एवं अघोर सेवा मण्डल के वरिष्ठ पदधारक श्री चन्द्रभूषण शुक्ल जी को बुलाया गया जिन्होंने क्रींकुण्ड स्थल को समस्त भूमण्डल पर सबसे अलौकिक एवं अद्भुत होना बताया तथा परम आदरणीय ब्रह्मलीन शावक राम बाबा के साथ श्रीचरण के अध्ययन काल में सारनाथ के अवधि की भी चर्चा की गयी। अपने उद्बोधन के मध्य श्री शुक्ला जी के द्वारा मनोहारी भजन "कीनाराम कचहरिया में न्याय होला" की दो पंक्तियाँ सुनाकर श्रोतागण को करतल ध्वनि हेतु उत्साहित किया गया। गोष्ठी के अगले वक्ता के रूप में अघोर भक्त श्री अशोक पाण्डेय जी को पुकारा गया जिन्होंने अपने ओजस्वी वक्तव्य से आज के आतंकवाद, आक्रान्त समाज के त्राण हेतु एकमात्र अघोरेश्वर विचारधारा को ही अपनाने एवं समस्त मानव जाति को एक सूत्र में पिरोने का कार्य क्रींकुण्ड स्थल की वाणियों द्वारा सफलता से किये जाने की चर्चा की। अपने उद्बोधन के मध्य श्री पाण्डेय जी द्वारा आज के विकृत मानसिक भेदभावपूर्ण सोच वाले मानवों से परिन्दों की तुलना करते हुए पंक्ति "कहीं मस्जिद बना बैठे-कहीं मंदिर बना बैठे, हमसे तो अच्छे परिन्दे हैं, कभी मंदिर पर जा बैठे, कभी मस्जिद पर जा बैठे" सुनाकर श्रोताओं की तालियों को बटोरा गया तथा समस्त कुरीतियों के उन्मूलन हेतु अघोर अवलम्बन को अपनाने हेतु आग्रह किया गया। गोष्ठी के अगले वक्ता के रूप में अघोर भक्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ० नन्दलाल सिंह जी को आमंत्रित किया गया जिन्होंने अपने को स्थल के भीखमंगे की संज्ञा देते हुए स्थल में उत्कीर्ण बाबा की वाणियों, सूक्तियों को आत्मसात हेतु कहा। गोष्ठी के अगले वक्ता के रूप में हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य, विद्वान अघोर भक्त श्री गया सिंह को विचार प्रस्तुत करने हेतु आमंत्रित किया गया। जिन्होंने अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्थल की महिमा को उद्धरित करते हुए स्वप्न में भी समस्याओं को गुरु के समक्ष रखने एवं उनके निराकरण का रहस्योद्घाटन किया तथा बाबा बीजाराम जी के अखण्ड ब्रह्मचर्य एवं हर दृश्यमान में गुरु छवि के ही दर्शन को समझाया। गोष्ठी के अन्तिम वक्ता के पश्चात् संचालक महोदय द्वारा आभार ज्ञापन हेतु वरिष्ठ अघोर भक्त श्री बृजभान सिंह, शाखा-कैथी शंकरपुर से अनुरोध किया गया। श्री सिंह द्वारा समस्त स्वयं सेवकों के साथ ही उपस्थित समस्त श्रद्धालु भक्तों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया गया एवं श्रीचरण की आज्ञा से गोष्ठी समापन की घोषणा की गई।

शोक समाचार

क्रींकुण्ड स्थल के श्रद्धालु एवं बुढ़ऊ बाबा के परम अघोर निष्ठ भक्त रामचन्द्र सरदार निवासी सोनारपुरा, वाराणसी विगत दिनांक 31 जनवरी 2016 दिन रविवार को शिव सायुज्य में समाहित हो गये। ध्यातव्य है कि बाल्यकाल से वर्तमान पीठाधीश्वर जी को सरदार "बाउ" कहकर ही सम्बोधित करते थे। हुतात्मा को अघोरेश्वर शान्ति प्रदान करें एवं शोक सन्तप्त परिवार को संबल दें।

श्रद्धांजलि

थे औघड़ के भक्त शिरोमणि रामचन्द्र सरदार थे;
स्थल में मन रमता उनका यहीं के झाड़ूदार थे;
सुबह-शाम भजनों को गाते मगन लुटाते प्यार थे;
नंगे बदन गठीले कद के सच्चे सेवादार थे;
थे औघड़ के भक्त.....

नाम मात्र के पढ़े लिखे पर ज्ञानी होशियार थे;
घुटने तक गमछा रहता था बांधे कमर तैयार थे;
दोनों हाथ में झाड़ू लेकर झाड़ते गर्द गुबार थे;
गृहस्थी की गाड़ी चलाते करते लघु व्यापार थे;
थे औघड़ के भक्त.....

बुढ़ऊ बाबा के "अहीरा" आशू बाबा के यार थे;
हर समाधि पे सिर को झुकाते निर्मल फुहार रसधार थे;
बाल वृद्ध सबसे बतिआते निश्छल निर्विकार थे;
हँसी ठहाके लहर-लहर उन्मुक्त बदन अनुदार थे;
थे औघड़ के भक्त.....

उदासीन रोते पीड़ित के आशा के संचार थे;
दुखियारों को गले लगा करते सबका उद्धार थे;
बाबा की महिमा ही मंत्रवत उनके सत्य विचार थे;
स्थल की विभूति रमाये परिवार के पालनहार थे;
थे औघड़ के भक्त.....

एम्बुलेंस से स्थल आये अंतिम करने जयकार थे;
मूकभाव करबद्ध वचन प्रिय "बाउ" को स्वीकार थे;
अनुरक्त-अश्रु आँखों में लेके विदा लिए फनकार थे;
अन्तकाल शिव-दर्शन पाके ही छोड़े संसार थे;
थे औघड़ के भक्त.....2

चतुर्थ पृष्ठ का शेष

त्रिवेणी संगम पर ही अवतरण दिवस क्यों?

एक रूप और समरसता को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार तीन गुण, तीन देव, तीन दृष्टियों (त्रिनेत्र) तीन ऋद्धियाँ, तीन शक्तियाँ, तीन नदियाँ, तीन दिन, तीन मत, तीन काल, तीन सुख, तीन पग, त्रिमूर्ति, तीन तन के संगम पर जब तक आरूढ हो हम सत्य, एकनिष्ठा या निश्चयात्मिका बुद्धि को नहीं प्राप्त कर लेते तब तक परमानन्द, परमसत्य या पूर्ण ज्ञान को नहीं प्राप्त कर सकेंगे। जब तक तीन तेरह का माया जाल, महामोह फांस है तब तक शिवत्व या ज्ञान स्वरूप को प्राप्त करना सम्भव नहीं। हमें तीनों के संगम को देखना है। इनकी एकरूपता का निरूपण कर एक चिरन्तन सत्य के प्रति निष्ठावान या एक निश्चयात्मक बुद्धि को प्राप्त करना है। इस एक निश्चयात्मिका बुद्धि से परे त्रिवेणी, त्रिगुण, माया मय, मोहजाल या मृग तृष्णा मात्र है।

लेकिन ऐसा नहीं, क्या वह सचमुच, माया, महामाया, भयावह, आशंका, मृग तृष्णा या एक अतृप्त पिपासा ही मात्र है? इसका कोई अन्त नहीं? नहीं नहीं, ऐसा नहीं। शिव शक्ति के संयोग से गणेश या ज्ञानानन्द की उत्पत्ति होती है। दो के मिलने से तीसरे की स्वत: उत्पत्ति हो जाती है और इस तीसरे का अस्तित्व ही दो के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। किसी भी भाव, गुण, दृष्टिकोण या काल का अपने आप में अस्तित्व की कोई अभिव्यक्ति नहीं है। यह ज्ञान का विषय नहीं है सतोगुण-सत्यप्रकाश स्वरूप या ज्ञान को जाना नहीं जा सकता। जब तक कि असत्य, अन्धकार, तमोगुण, विकार या अज्ञान का कोई अस्तित्व न हो। वास्तव में सत्य, असत्य, ज्ञान, अज्ञान का अस्तित्व ही एक संदेह, एक मोह, भ्रम या एक 'लेकिन' पर निर्भर करता है। जैसे क्या है का निर्णय क्यों है पर निर्भर करता है। यदि क्यों है एक जिज्ञासा समझने का एक दृष्टिकोण, मोह या आसक्ति न हो तो सत्य, असत्य, ज्ञान, अज्ञान, प्रकाश, अन्धकार, माया, मायापति में कोई अन्तर ही नहीं है। इस सारे ब्रह्माण्ड में यही माया, महामाया, भय, आशंका या चामुण्डा का अस्तित्व या महात्म्य है।

शेष अगले अंक में

त्रिवेणी संगम पर ही अवतरण दिवस क्यों?

प्रश्न कई बार उठा है कि महाकापालिक अघोरेश्वर महाप्रभु एवं सर्वशक्ति समन्विता माँ सर्वेश्वरी का पुनीत अवतरण दिवस तीर्थराज प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर ही क्यों मनाया जाता है। अवतरण जिस प्रकार से प्रतीकात्मक है, उसी प्रकार से प्रयाग का त्रिवेणी संगम भी साधकों एवं संतों के लिये प्रतीकात्मक है। अजन्मा, अछेद, अभेद, अलख, कोटि कोटि ब्रह्माण्डों का सर्जन, पालन एवं संहार लीलावश करने वाली ब्रह्म शक्ति अथवा सर्वेश्वरी का अवतरण साधकों, उपासकों एवं भक्तों के भावानुरूप ही होता है। जब जब जीवात्मायें अपने स्वरूप को भूलकर नाना प्रकार के आडम्बरों, मतमतान्तरों एवं भेद भावों का सर्जन कर आपस में घृणा, द्वेष, ईर्ष्या एवं अन्य विकारों के वशीभूत हो द्वन्द्वात्मक स्थिति में पहुँच कर सृष्टि क्रम में व्यतिक्रम उपस्थित करती है, तब तब माता अवतार लेकर जीव का मार्गदर्शन करती हैं।

प्रत्येक पिण्ड में ब्रह्माण्ड अवस्थित है। जो ब्रह्माण्ड में घटित होता है, वही पिण्ड में भी घटित होता है क्योंकि आत्मा सर्वत्र, सर्वस्व में एक रस, एक रूप में विद्यमान है। मोह आवरण के वशीभूत हो जीव, शरीर धारण करने पर अपने लक्ष्यों से विचलित हो, स्वरूप में स्थित नहीं होने के कारण, इसका दिग्दर्शन नहीं कर पाता। जब आद्याशक्ति माँ भगवती, जगद् जननी जगदम्बिका की असीम अनुकम्पा से अव्यय ज्ञान को प्रश्रय देने वाली माँ गुरु की कृपा से वह सुमेधा को प्राप्त कर, श्रीगुरुचरणों का सान्निध्य प्राप्त करता है, उस समय वह श्रीगुरुचरणों के सायुज्य से स्वरूप को प्राप्त करता है, आत्म दर्शन करता है। यही शरीर धारण करने की, जीवधारियों के जीवन की सार्थकता है।

प्रयाग में गंगा, जमुना एवं सरस्वती के संगम स्थल को तीर्थराज प्रयाग की संज्ञा दी गई है। याग यज्ञ को कहते हैं प्र उपसर्ग है। प्रयाग यानी जहाँ अनन्त काल से याग होता आया है। यह भी प्रतीकात्मक है। यही इस पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड में भी घटित होता है। इंगला, पिंगला एवं सुषुम्ना का पिंड में जहाँ संगम होता है। वह स्थान भी श्रीगुरु चरण रूपी तीर्थराज प्रयाग ही है। इसी का प्रतीक गंगा, जमुना, सरस्वती, त्रिवेणी का संगम तीर्थराज प्रयाग है जो जीवधारियों को अपने स्वरूप में श्री गुरुचरण रूपी तीर्थराज प्रयाग में निरन्तर गोता लगाने की प्रेरणा देता है। त्रय शक्तियों महालक्ष्मी, महाकाली एवं महासरस्वती का संगम स्थल आद्या शक्ति परम ब्रह्म परमेश्वरी माँ सर्वेश्वरी हैं। त्रिकालों के परे महाकाल रूप में, महाकापालिक ही उस सर्वेश्वरी का प्रतीक है। त्रिदेवों ब्रह्मा, विष्णु, महेश का संगम या एकरुपता प्राप्त करने वाला या प्रतीक स्वरूप आदि गुरु दत्तात्रेय अथवा दूसरे शब्दों में सदाशिव ही हैं। त्रिगुणों का संगम अथवा लय स्थान महाशून्य अथवा ब्रह्म ही है। इन सभी त्रिवेणियों का प्रतीक रूप प्रयाग का त्रिवेणी संगम है जो जीव को सतत् स्व त्रिवेणी में अन्तर्मुख हो लीन रहने का प्रेरणा प्रदान करता है।

सारा ब्रह्माण्ड चाहे वह प्रत्यक्ष हो अथवा परोक्ष, तीन व्यष्टियों में विकृत है। हम अपने अस्तित्व को भी तीन वेणियों में आबद्ध कर रक्खें हैं। हम यह नहीं समझ पाते कि हमारा अस्तित्व इन तीनों के परे भी है। हम अपनी सारी शक्तियों को इन तीन तक ही सीमित समझ बैठे हैं। इनसे अलग होकर कुछ जानने या समझने की चेष्टा भी मृषावाद बन गई। फलत: हम अपने त्रिगुणातीत स्वरूप को न पहचान कर मोह, माया, महामाया में ही ग्रसित है। हमें वेद, कुरान या अनेक धर्म, सम्प्रदाय के प्रति कर्त्तव्य परायणता और ईमानदारी बरतना आवश्यक है। लेकिन धर्म या धर्मादेशों के प्रति कर्त्तव्यपरायण होने का यह अर्थ नहीं कि हम अपने आपको ही भूल जायें। इसी दृष्टिकोण से भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में इस बात को स्पष्ट किया है "त्रैगुणया विषया वेद: नि त्रैगुणो भवार्जुनो।" अर्जुन वेद भी इन्हीं तीन गुणों से आबद्ध हैं। तुम इनसे अलग अपने अस्तित्व को समझो। तीन वेणियां ही जीवन, काल, लोक, मन, दृष्टि, बुद्धि, मर्यादा या ब्रह्माण्ड के अस्तित्व को बनाये हुये है। यदि इनमें से एक वेणी भी टूट जाय तो जीवन के प्रत्यक्ष या परोक्ष सृष्टि को एक छोर मिल जायेगा। यदि केवल दो ही गुण लोक या काल इत्यादि में हो तो जीवन या ब्रह्माण्ड का सारा अस्तित्व इस त्रिशंकु की तरह नहीं लटका रहता। न तो मन, मस्तिष्क या विचारों को कोई निश्चयात्मक निर्णय लेने में परेशानी होती, न जीवन का यह सारा तीन फेरवट ही रहता। जैसे दो निर्णयात्मक वाक्यों के बीच में यदि पर, मगर या लेकिन लग जाय तो दोनों निर्णयों की सार्थकता बदल जाती है। सत और तम के बीच रज या इसी तरह का कोई फेरा चला आये तो भव जाल या विधि प्रपंच उठ खड़ा होता है। सुख और दु:ख के बीच (लेकिन) का प्रश्न मन को उदास कर देता है। अगर मनुष्य केवल सुखी हो तो इस बात का कोई अर्थ नहीं। क्योंकि सुख एवं दु:ख, ज्ञान या अज्ञान, प्रेम या घृणा, शान्ति या अशान्ति की पराकाष्ठा की अभिव्यक्ति सम्भव हो सकती है परन्तु इसकी पूर्ण अभिव्यंजना सम्भव नहीं। शिव और शव, ज्ञान और अज्ञान, काल और अकाल, निर्णय और अनिर्णय के मध्य (पर, मगर, लेकिन) के सन्देह, भय, अज्ञान या मोह की एक ऐसी मायावी शक्ति है जिसका अपने आपमें कोई अस्तित्व नहीं, परन्तु यही शक्ति संसार और सभी के तन, मन, मस्तिष्क पर भयावह प्रश्न बन कर छायी हुई है। इसी के कारण मन, मस्तिष्क एवं जीवन निर्बाध, निरन्तर या चिन्मय मात्र नहीं बन पाता। हमारा दृष्टिकोण, निर्णय, विचार, मत, मस्तिष्क सभी कुछ इसी अव्यक्त, अस्तित्वहीन महामाया के चामुण्डा की सत्ता से कुण्ठित है। ये हैं क्या चामुण्डा, दो अस्तित्व, दो छोर, दो निर्णय के बीच में, लेकिन, पर, मगर से व्याप्त एक संदेह मोह, भ्रमजाल बन कर? कुछ नहीं, मात्र एक भ्रम, संदेह, जिज्ञासा, जो ब्रह्माण्ड में चतुर्दिक व्याप्त है। इसका पूर्व वास्तविक स्वरूप क्या है? कुछ नहीं, मात्रा माया, महामाया, भयावह आशंका, जिज्ञासा, पिपासा, मृगतृष्णा, जिसका कोई अंत नहीं।

हमारे यहाँ ब्रह्म को भी अद्वैत की संज्ञा दी गई है। अद्वैत = अ = नहीं = द्वैत दो। ब्रह्म दो नहीं है। ब्रह्म को एक नहीं कहा गया। उसे दो और एक के मध्य प्रतिष्ठित कर अद्वैत की संज्ञा दी गई। महाप्रभु के शब्दों में भी भगवान हाँ और ना के बीच में है। क्योंकि इसके सम्बन्ध में एकनिष्ठ निर्णय ले लेना किसी भी जिज्ञासु के शक्ति के परे है, वास्तव में हाँ और ना के निश्चयात्मक छोरों के बीच में तीसरी कौन सी शक्ति है, जिसके मोह जाल, भ्रम या अन्धकार में हम इन दो छोरों के बीच में निश्चयात्मक बुद्धि को भी त्यागने को विवश हो जाते हैं। यह तीसरी शक्ति ही सारे ब्रह्माण्ड में मात्र माया, मोह जाल बन कर जीवन, मृत्यु या जीवन के दो छोर सुख, दु:ख, ज्ञान, अज्ञान, अन्धकार, प्रकाश, योग, भोग के बीच व्याप्त है। इन दो तत्त्वों के बीच एक अद्वितीय शक्ति जो ब्रह्म के अद्वैत शिवरूप बन व्याप्त है, अगर यह अद्वैत का अद्वितीय रूप न रहे तो सम्पूर्ण मात्र एक है। योग, भोग, ज्ञान, अज्ञान, पाप, पुण्य, सत्य, असत्य में कोई भी अन्तर नहीं है। एक को ही एक अद्वितीय शक्ति ने अपने मायावी रूप से दो में विभक्त कर स्वत: अपना तीसरा स्थान बना लिया। इसका तीसरा स्थान अपने आप में मात्र माया, महामाया, भय, आशंका या सन्देह मात्र है। इसी को समझ लेने से एकनिष्ठ ज्ञान या निश्चयात्मक बुद्धि प्राप्त होती है। जहाँ "अहं ब्रह्मास्मि" "एकोऽहं द्वितीयोनास्ति" "ज्ञानमेव ब्रह्म" के अभिव्यक्ति की अनुभति प्राप्त होती है।

हमारे यहाँ संसार के अस्तित्व को तीन पर आश्रित किया गया है। अघोरी इस त्रिकोणांगुलि के संगम पर सुराशक्ति को प्रतिष्ठित कर आत्मानन्द की अनुभूति करता है। दो के मिलन से तीसरी शक्ति की उत्पत्ति होती है। और दो के उत्पत्ति का आधार एक है। शव और शिव इसी शक्ति के सायुज्य से संचारित होते हैं। यहाँ हम त्रिकोण या तीन के संगम पर निर्भर करने वाले चिरंतन सत्य के सम्बन्ध में थोड़ा सा प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे। त्रिकाल = तीन काल। काल या समय वास्तव में एक और एक रस है, परन्तु हम प्रत्यक्ष या स्थूल दृष्टि के आधार पर ही काले को तीन भागों में विभाजित कर लेते हैं। भूत, भविष्यत एवं वर्तमान। भूत एवं भविष्यत के मध्य वर्तमान अवस्थित है। यो वर्तमान का कोई निश्चित क्षण या अस्तित्व नहीं। यह मात्र एक कल्पना या मोह मात्र है जो कि भूत एवं भविष्यत को अस्तित्व प्रदान किये हुये है। अगर हम वर्तमान के ज्ञान, मोहजाल या भ्रम से बच जाय तो हमारे समक्ष समय का निर्बाध, अव्यक्त एवं अव्यय हीन स्वरूप स्पष्ट होगा। हमारे यहाँ इस वर्तमान के ज्ञान से था। इसके माया भय भ्रम जाल से विज्ञ कापालिक काल को कवलित कर जाता है। वह स्वत: वर्तमान का रूप हो जाता है। फिर उसे समय का यह रूप, अवधि, व्यतिक्रम या काल चक्र बाधित नहीं कर पाता। कापालिक इस त्रिवेणी, काल के तीन वेणियों के संगम पर प्रतिष्ठित हो

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

☞ **सभी अपने-अपने लिये स्वतन्त्र हैं। यद्यपि इस तरह की स्वतन्त्रता जीवन में कभी-कभी विष का भी कार्य करती है। वह विष प्राण भी ले सकता है और गलत पथ पर भी ले जा सकता है।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी